

प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 13 मई, 2017 को चिकित्सा विश्वविद्यालय के नये दंत संकाय भवन स्थित सी0पी0 गोविला सभागार में प्रोस्थोडॉटिक्स विभाग की ओर से “इंट्रा ओरल वेल्डिंग के साथ एक दन्तहीन जबड़े की तत्काल पुनर्वास की अनुमानित सफलता” (Predictable Success of Immediate Rehabilitation of an Edentulous Jaw with Intra Oral Welding) विषय पर एक प्रदर्शन सहित व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शन सहित व्याख्यान, अतिथि वक्ता प्रो0 जी0के0 गुप्ता द्वारा प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में उपस्थित व्यक्तियों में चिकित्सा विश्वविद्यालय के मा0 कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट, प्रो0 शादाब मोहम्मद, अधिष्ठाता दंत संकाय, प्रो0 पूरन चंद्र, विभागाध्यक्ष प्रोस्थोडॉटिक्स विभाग, डॉ0 कमलेश्वर सिंह आयोजन सचिव सहित दंत संकाय के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य सहित रेजीडेंट्स डॉक्टर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में मा0 कुलपति जी ने अपने संबोधन में कहा कि चिकित्सा विश्वविद्यालय के दंत संकाय का यह विभाग पूरे देश में बड़ा विभाग है यहां पर शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ ही साथ बहुत ही बड़े स्वरूप में क्लिनिकल कार्य भी किया जाता है। यह विभाग चिकित्सा विश्वविद्यालय का बहुत ही जीवंत विभाग है। दंत संकाय विभाग के उत्तरोत्तर और वर्हिमुखी विकास के लिए हर सम्भव प्रयास किया जायेगा।

कार्यक्रम में अतिथि वक्ता प्रो0 जी0के0 गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि जनसंख्या का एक औसत वर्ग को दंत चिकित्सको से दंत विहिन जबड़ों के पुनर्वास की काफी उम्मीद बढ़ गयी है। इस प्रकार दंत मरीजों की आशाओं के कारण दंत विहिन जबड़ों का पुनर्वास डॉक्टरों के लिए एक चुनौती बन गई है, यह चुनौती और भी कठिन तब हो जाती है जब मरीज चाहता है कि उसे प्रोस्थेटिक लगाने के बाद वह तुरंत कार्य करना शुरू कर दे। मूल रूप से दंत प्रत्यारोपण को दो चरणों में लगाया जाता है, जहां प्रत्यारोपण के तीन से छः माह की अवधि के बाद उस पर ओसियोइंटीग्रेशन के बाद दाँत लगाये जाते हैं। तत्काल इम्प्लांट लगाने में सबसे बड़ी चुनौती शल्य क्रिया के दो दिनों के अंदर या अधिकतम दो दिन पर कृत्रिम अंग के पुर्ननिर्माण और कृत्रिम अंग के वितरण और उसे लगाने की चुनौती है। इन सभी चुनौतियों को सभी प्रत्यारोपणों को एक साथ मिला के कृत्रिम अंग का निर्माण किया जाता है जो कि सर्जरी के दिन ही मरीज को लगाया जाता है। यह हमें **Passive superstructure** और **Titanium Reinforced resin** का कृत्रिम अंग बनाने में मदद करता है। यह आसानी से मरम्मत करने लायक तथा टिकाऊ भी होता है। इंट्राओरल वेल्डिंग तकनीक दंत विहीन जबड़ों के पुनर्वास का एक नया क्रांतिकारी तरीका है और इस तकनीक से एक दिन में एक दीर्घकालिक टिकाऊ कृत्रिम अंग प्रदान किया है।

फिजियोलॉजी विभाग

आज प्रातः फिजियोलॉजी विभाग में प्रथम तल पर स्थित एक कक्ष में अचानक धुवां दिखाई निकलता हुआ दिखाई देने लगा, देखते ही देखते धुवा पूरे कमरे में भर गया। फिजियोलॉजी विभाग के कर्मचारियों एवं चिकित्सा शिक्षकों द्वारा सुझ-बुझ का परिचय देते हुए आग पाने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया गया वही दूसरी तरफ अग्नि शमन विभाग को भी तत्काल सूचना उपलब्ध करायी गयी। अग्नि शमन विभाग द्वारा तत्परता का परिचय देते हुए आग पर शीघ्र ही काबू पा लिया गया। आग लगने की सम्भावित वजह शार्ट-सर्किट बताई जा रही है। इस दुर्घटना मे किसी तरह की कोई जान-माल की हानि नहीं हुई है। कमरे में रखा एक बेड दो गद्दा तथा एक कम्प्यूटर जल गया था।

(प्रो० नरसिंह वर्मा)

प्रवक्ता, मीडिया सेल

चिकित्सा, संकाय